



# Aadhaya Gupta

31 Mar 2009

03:29 PM

Delhi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121548201

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 31/03/2009  
दिन \_\_\_\_\_: मंगलवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 15:29:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 23:10:44 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Delhi  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 28:39:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 77:13:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:21:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 15:07:52 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:04:10 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 03:43:30 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:12:42 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:38:24 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:25:42 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 16:50:10 मीन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 06:08:41 सिंह

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: रोहिणी - 3  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: चन्द्र  
योग \_\_\_\_\_: आयुष्मान  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: सर्प  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: वैश्य  
वश्य \_\_\_\_\_: चतुष्पाद  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: पूर्व  
हंसक \_\_\_\_\_: भूमि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: वी-वीणा  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - स्वर्ण  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1931	चैत्र	10
पंजाबी	संवत : 2065	चैत्र	18
बंगाली	सन् : 1415	चैत्र	17
तमिल	संवत : 2065	पंगुनी	18
केरल	कोल्लम : 1184	मीनम	17
नेपाली	संवत : 2065	चैत्र	18
चैत्रादि	संवत : 2066	चैत्र	शुक्ल 5
कार्तिकादि	संवत : 2066	चैत्र	शुक्ल 5

### पंचांग

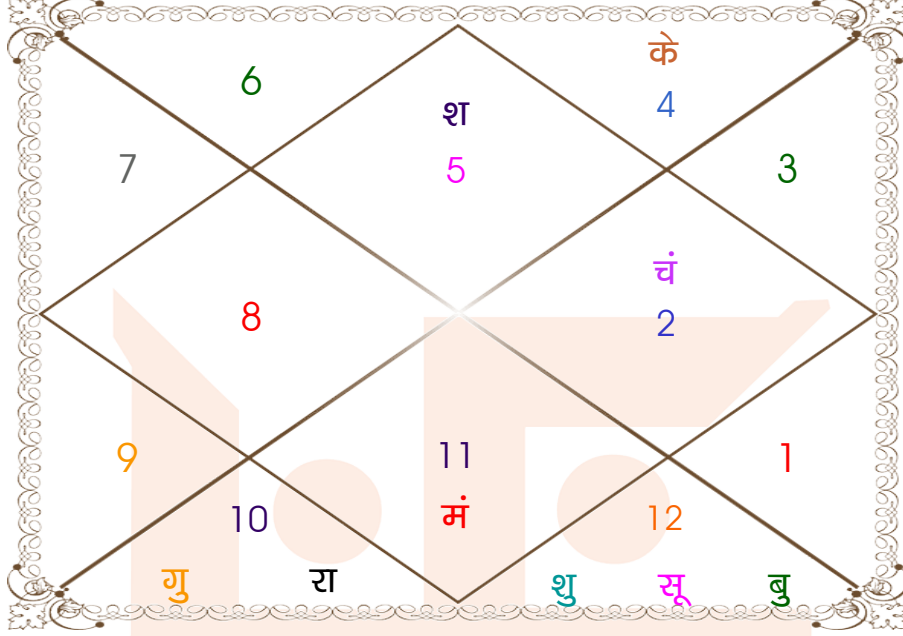
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 5  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:19:58  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 6  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 24:30:13 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : रोहिणी  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : आयुष्मान  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 23:38:48 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : आयुष्मान  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बालव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:19:58 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 34:00:53  
भभोग \_\_\_\_\_ : 56:33:56  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : चंद्र 3 वर्ष 11 मा 26 दि

### घात चक्र

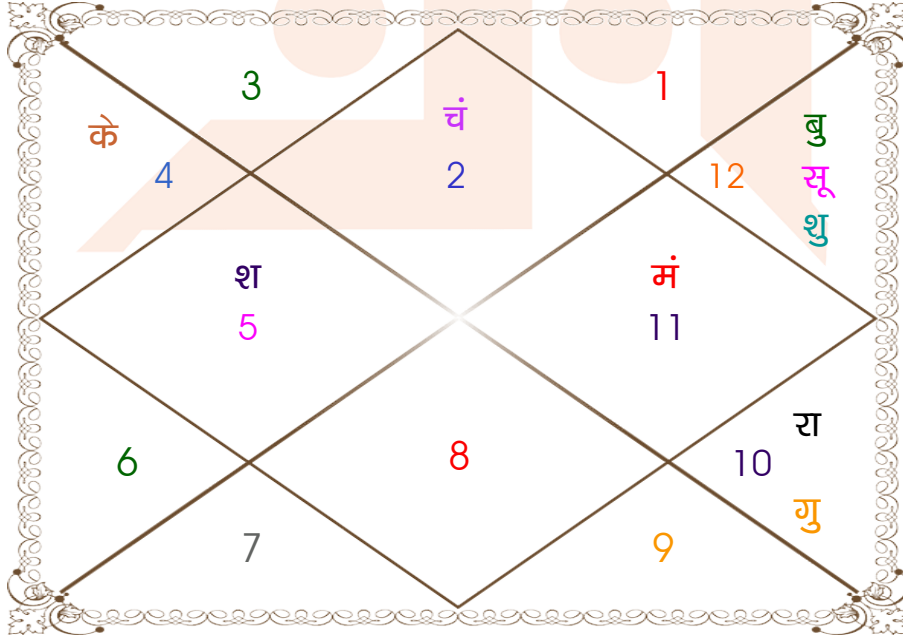
मास \_\_\_\_\_ : मार्गशीर्ष  
तिथि \_\_\_\_\_ : 5-10-15  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : हस्त  
योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
करण \_\_\_\_\_ : शकुनि  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृष  
सूर्य \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : धनु  
बुध \_\_\_\_\_ : कन्या  
गुरु \_\_\_\_\_ : मकर  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मकर  
शनि \_\_\_\_\_ : तुला  
राहु \_\_\_\_\_ : मकर

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

शु सू बु		चं	
मं			के
रा गु			श ल

### लग्न कुंडली

	चं		बु सू शु
			मं
के			रा गु
ल श			

विंशोत्तरी  
चन्द्र 3वर्ष 11मा 26दि  
चन्द्र

31/03/2009

28/03/2123

चन्द्र	27/03/2013
मंगल	27/03/2020
राहु	27/03/2038
गुरु	27/03/2054
शनि	27/03/2073
बुध	27/03/2090
केतु	27/03/2097
शुक्र	28/03/2117
सूर्य	28/03/2123

योगिनी

सिद्धा 2वर्ष 9मा 15दि  
भामरी

14/01/2026

14/01/2030

भामरी	26/06/2026
भद्रिका	15/01/2027
उल्का	15/09/2027
सिद्धा	25/06/2028
संकटा	16/05/2029
मंगला	26/06/2029
पिंगला	15/09/2029
धान्या	14/01/2030

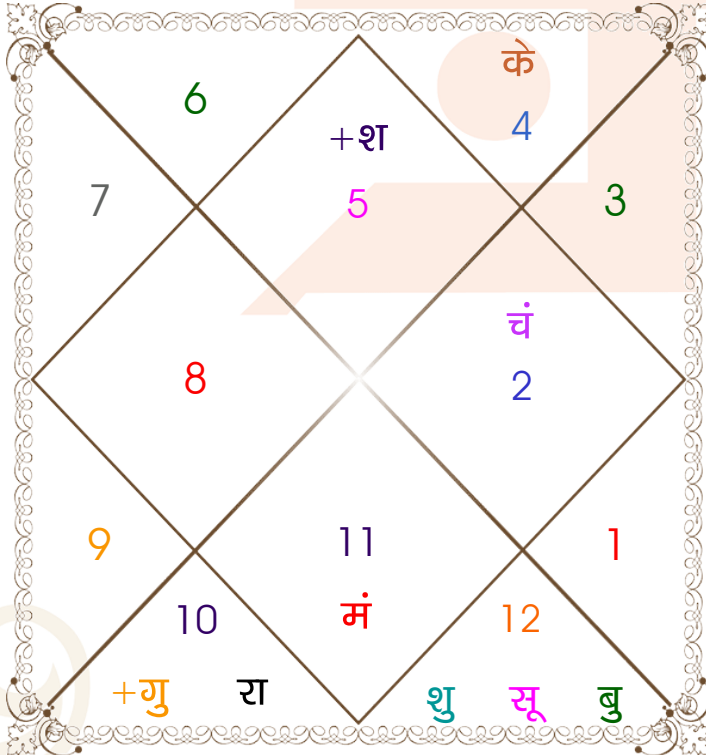
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	06:08:41	312:14:16	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	---
सूर्य			मीन	16:50:10	00:59:15	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
चंद्र			वृष	18:00:55	14:08:49	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण
मंगल			कुंभ	18:45:12	00:46:55	शतभिषा	4	24	शनि	राहु	चंद्र	सम राशि
बुध		अ	मीन	17:07:10	02:02:10	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	नीच राशि
गुरु			मक	25:00:07	00:11:18	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	नीच राशि
शुक्र	व		मीन	11:02:08	00:36:01	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	उच्च राशि
शनि	व		सिंह	22:40:21	00:04:08	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
राहु	व		मक	12:59:28	00:04:36	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	मित्र राशि
केतु	व		कर्क	12:59:28	00:04:36	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	मित्र राशि
हर्ष			कुंभ	29:39:16	00:03:19	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	चंद्र	---
नेप			कुंभ	01:35:09	00:01:44	धनिष्ठा	3	23	शनि	मंगल	बुध	---
प्लूटो			धनु	09:18:20	00:00:08	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
दशम भाव			वृष	04:08:32	--	कृतिका	--	3	शुक्र	सूर्य	शनि	--

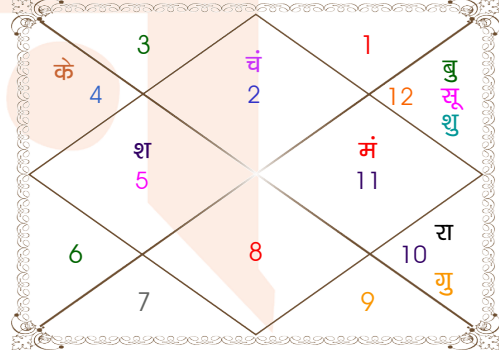
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:59:24

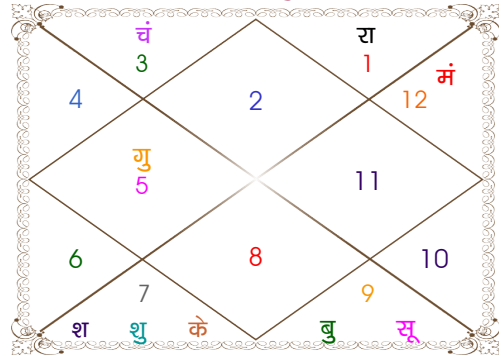
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कर्क 20:48:39	सिंह 06:08:41
2	सिंह 20:48:39	कन्या 05:28:38
3	कन्या 20:08:36	तुला 04:48:35
4	तुला 19:28:33	वृश्चिक 04:08:32
5	वृश्चिक 19:28:33	धनु 04:48:35
6	धनु 20:08:36	मकर 05:28:38
7	मकर 20:48:39	कुम्भ 06:08:41
8	कुम्भ 20:48:39	मीन 05:28:38
9	मीन 20:08:36	मेष 04:48:35
10	मेष 19:28:33	वृष 04:08:32
11	वृष 19:28:33	मिथुन 04:48:35
12	मिथुन 20:08:36	कर्क 05:28:38

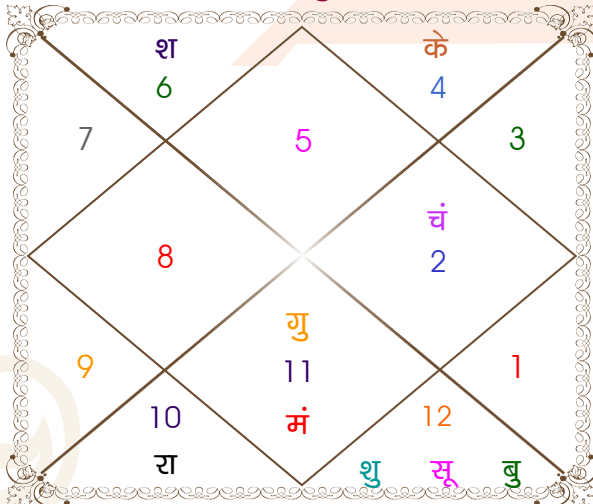
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	06:08:41
2	कन्या	02:07:54
3	तुला	01:55:54
4	वृश्चिक	04:08:32
5	धनु	06:25:10
6	मकर	07:15:22
7	कुम्भ	06:08:41
8	मीन	02:07:54
9	मेष	01:55:54
10	वृष	04:08:32
11	मिथुन	06:25:10
12	कर्क	07:15:22

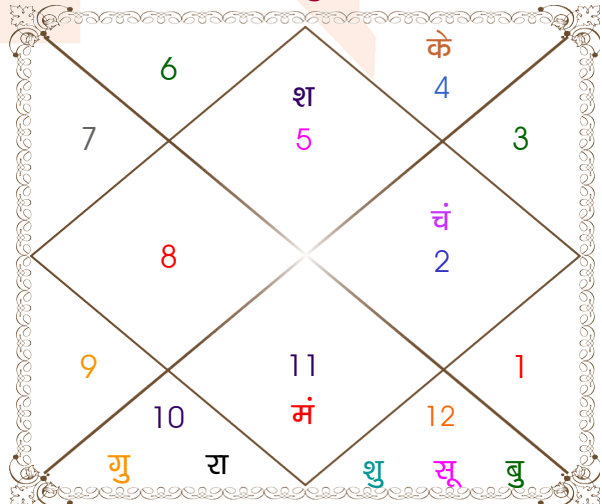
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 3 वर्ष 11 मास 26 दिन

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
31/03/2009	27/03/2013	27/03/2020	27/03/2038	27/03/2054
27/03/2013	27/03/2020	27/03/2038	27/03/2054	27/03/2073
00/00/0000	मंगल 23/08/2013	राहु 08/12/2022	गुरु 14/05/2040	शनि 30/03/2057
00/00/0000	राहु 11/09/2014	गुरु 03/05/2025	शनि 26/11/2042	बुध 08/12/2059
00/00/0000	गुरु 18/08/2015	शनि 08/03/2028	बुध 03/03/2045	केतु 16/01/2061
00/00/0000	शनि 25/09/2016	बुध 26/09/2030	केतु 07/02/2046	शुक्र 18/03/2064
31/03/2009	बुध 23/09/2017	केतु 14/10/2031	शुक्र 08/10/2048	सूर्य 28/02/2065
बुध 27/06/2010	केतु 19/02/2018	शुक्र 14/10/2034	सूर्य 27/07/2049	चंद्र 29/09/2066
केतु 26/01/2011	शुक्र 21/04/2019	सूर्य 08/09/2035	चंद्र 26/11/2050	मंगल 08/11/2067
शुक्र 25/09/2012	सूर्य 27/08/2019	चंद्र 09/03/2037	मंगल 02/11/2051	राहु 14/09/2070
सूर्य 27/03/2013	चंद्र 27/03/2020	मंगल 27/03/2038	राहु 27/03/2054	गुरु 27/03/2073

बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष
27/03/2073	27/03/2090	27/03/2097	28/03/2117	28/03/2123
27/03/2090	27/03/2097	28/03/2117	28/03/2123	00/00/0000
बुध 24/08/2075	केतु 23/08/2090	शुक्र 27/07/2100	सूर्य 16/07/2117	चंद्र 27/01/2124
केतु 20/08/2076	शुक्र 24/10/2091	सूर्य 28/07/2101	चंद्र 14/01/2118	मंगल 27/08/2124
शुक्र 21/06/2079	सूर्य 28/02/2092	चंद्र 28/03/2103	मंगल 22/05/2118	राहु 26/02/2126
सूर्य 26/04/2080	चंद्र 28/09/2092	मंगल 28/05/2104	राहु 16/04/2119	गुरु 28/06/2127
चंद्र 26/09/2081	मंगल 25/02/2093	राहु 28/05/2107	गुरु 02/02/2120	शनि 26/01/2129
मंगल 23/09/2082	राहु 15/03/2094	गुरु 26/01/2110	शनि 14/01/2121	बुध 01/04/2129
राहु 11/04/2085	गुरु 19/02/2095	शनि 28/03/2113	बुध 20/11/2121	00/00/0000
गुरु 18/07/2087	शनि 30/03/2096	बुध 27/01/2116	केतु 28/03/2122	00/00/0000
शनि 27/03/2090	बुध 27/03/2097	केतु 28/03/2117	शुक्र 28/03/2123	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 3 वर्ष 11 मा 25 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>राहु - शनि</b> 03/05/2025 08/03/2028	<b>राहु - बुध</b> 08/03/2028 26/09/2030	<b>राहु - केतु</b> 26/09/2030 14/10/2031	<b>राहु - शुक्र</b> 14/10/2031 14/10/2034	<b>राहु - सूर्य</b> 14/10/2034 08/09/2035
शनि 14/10/2025 बुध 11/03/2026 केतु 11/05/2026 शुक्र 31/10/2026 सूर्य 22/12/2026 चंद्र 19/03/2027 मंगल 19/05/2027 राहु 22/10/2027 गुरु 08/03/2028	बुध 18/07/2028 केतु 11/09/2028 शुक्र 13/02/2029 सूर्य 01/04/2029 चंद्र 17/06/2029 मंगल 10/08/2029 राहु 28/12/2029 गुरु 01/05/2030 शनि 26/09/2030	केतु 18/10/2030 शुक्र 21/12/2030 सूर्य 09/01/2031 चंद्र 10/02/2031 मंगल 05/03/2031 राहु 01/05/2031 गुरु 21/06/2031 शनि 21/08/2031 बुध 14/10/2031	शुक्र 14/04/2032 सूर्य 08/06/2032 चंद्र 07/09/2032 मंगल 10/11/2032 राहु 23/04/2033 गुरु 16/09/2033 शनि 09/03/2034 बुध 11/08/2034 केतु 14/10/2034	सूर्य 31/10/2034 चंद्र 27/11/2034 मंगल 16/12/2034 राहु 03/02/2035 गुरु 19/03/2035 शनि 10/05/2035 बुध 26/06/2035 केतु 15/07/2035 शुक्र 08/09/2035
<b>राहु - चंद्र</b> 08/09/2035 09/03/2037	<b>राहु - मंगल</b> 09/03/2037 27/03/2038	<b>गुरु - गुरु</b> 27/03/2038 14/05/2040	<b>गुरु - शनि</b> 14/05/2040 26/11/2042	<b>गुरु - बुध</b> 26/11/2042 03/03/2045
चंद्र 24/10/2035 मंगल 24/11/2035 राहु 15/02/2036 गुरु 28/04/2036 शनि 23/07/2036 बुध 09/10/2036 केतु 10/11/2036 शुक्र 09/02/2037 सूर्य 09/03/2037	मंगल 31/03/2037 राहु 28/05/2037 गुरु 18/07/2037 शनि 16/09/2037 बुध 10/11/2037 केतु 02/12/2037 शुक्र 04/02/2038 सूर्य 23/02/2038 चंद्र 27/03/2038	गुरु 09/07/2038 शनि 09/11/2038 बुध 28/02/2039 केतु 14/04/2039 शुक्र 22/08/2039 सूर्य 30/09/2039 चंद्र 04/12/2039 मंगल 19/01/2040 राहु 14/05/2040	शनि 08/10/2040 बुध 16/02/2041 केतु 11/04/2041 शुक्र 12/09/2041 सूर्य 28/10/2041 चंद्र 14/01/2042 मंगल 09/03/2042 राहु 25/07/2042 गुरु 26/11/2042	बुध 23/03/2043 केतु 10/05/2043 शुक्र 25/09/2043 सूर्य 06/11/2043 चंद्र 14/01/2044 मंगल 02/03/2044 राहु 04/07/2044 गुरु 23/10/2044 शनि 03/03/2045
<b>गुरु - केतु</b> 03/03/2045 07/02/2046	<b>गुरु - शुक्र</b> 07/02/2046 08/10/2048	<b>गुरु - सूर्य</b> 08/10/2048 27/07/2049	<b>गुरु - चंद्र</b> 27/07/2049 26/11/2050	<b>गुरु - मंगल</b> 26/11/2050 02/11/2051
केतु 23/03/2045 शुक्र 18/05/2045 सूर्य 04/06/2045 चंद्र 03/07/2045 मंगल 23/07/2045 राहु 12/09/2045 गुरु 27/10/2045 शनि 20/12/2045 बुध 07/02/2046	शुक्र 19/07/2046 सूर्य 06/09/2046 चंद्र 26/11/2046 मंगल 22/01/2047 राहु 17/06/2047 गुरु 25/10/2047 शनि 27/03/2048 बुध 12/08/2048 केतु 08/10/2048	सूर्य 22/10/2048 चंद्र 15/11/2048 मंगल 03/12/2048 राहु 15/01/2049 गुरु 23/02/2049 शनि 11/04/2049 बुध 22/05/2049 केतु 08/06/2049 शुक्र 27/07/2049	चंद्र 05/09/2049 मंगल 04/10/2049 राहु 16/12/2049 गुरु 19/02/2050 शनि 07/05/2050 बुध 15/07/2050 केतु 12/08/2050 शुक्र 01/11/2050 सूर्य 26/11/2050	मंगल 16/12/2050 राहु 05/02/2051 गुरु 22/03/2051 शनि 15/05/2051 बुध 02/07/2051 केतु 22/07/2051 शुक्र 17/09/2051 सूर्य 04/10/2051 चंद्र 02/11/2051

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

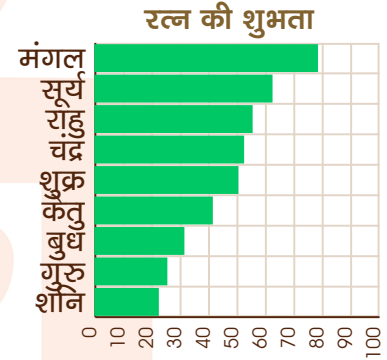
मूलांक	4
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 6, 9
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहूँ
दान द्रव्य	घी

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	78%	दम्पति, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	62%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
गोमेद	राहु	55%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	52%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
हीरा	शुक्र	50%	दुर्घटना से बचाव, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	41%	व्यय, व्यावसायिक हानि
पन्ना	बुध	31%	दुर्घटना, हानि, धन हानि
पुखराज	गुरु	25%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	22%	रोग, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	27/03/2013	69%	64%	78%	44%	25%	50%	22%	34%	16%
मंगल	27/03/2020	69%	58%	91%	6%	38%	50%	22%	34%	52%
राहु	27/03/2038	50%	29%	66%	31%	25%	56%	34%	67%	16%
गुरु	27/03/2054	69%	58%	84%	6%	50%	25%	22%	55%	41%
शनि	27/03/2073	50%	29%	66%	44%	25%	56%	47%	61%	16%
बुध	27/03/2090	69%	29%	78%	53%	25%	56%	22%	55%	41%
केतु	27/03/2097	50%	29%	84%	31%	25%	56%	0%	34%	58%
शुक्र	28/03/2117	50%	29%	78%	44%	25%	62%	34%	61%	52%
सूर्य	28/03/2123	75%	58%	84%	31%	38%	25%	0%	34%	16%

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/03/2009-10/09/2009	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----

### द्वितीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064

### तृतीय चक्र:

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076	11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090	21/05/2091-02/07/2093	-----

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया  
अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया  
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया

#### फल

अशुभ  
शुभ  
सम  
शुभ  
शुभ

#### क्षेत्र

बुरा स्वास्थ्य  
सन्तति  
बदनामी  
व्यावसायिक उन्नति  
धनार्जन

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपके पति का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी जिससे यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होंगे तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकती हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अन्त में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्य दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगी तथा समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा तथा यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके

सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में महापद्म नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को प्रेम प्रसंग में प्रायः सफलता हस्तगत नहीं होती है। गृहस्थी जीवन सामान्य होते हुए भी आंशिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है। स्त्री मनोनकूल नहीं मिलती है। जातक के शरीर में समय-समय पर थोड़ा बहुत रोग व्याधि घेर लेती है। जातक को मानसिक परेशानियाँ भी लग जाती हैं और मन थोड़ा बहुत अशान्त रहता है। जीवन में शोक दुःख थोड़ा बहुत आता रहता है और मन में कभी-कभी निराशा की भावना जागृत हो जाती है। आत्मबल कमजोर रहता है। जातक यात्राएँ अधिक करता है पर सफलता आंशिक रूप में मिलती है। शत्रुगण समय-समय पर षडयन्त्र रचते रहते हैं। जिस कारण जातक को आंशिक रूप से नुकसान उठाना पड़ता है। जातक धर्मादि कार्य में विशेष रुचि नहीं रखता है और धर्म की आंशिक क्षति होती है।

इस योग के कारण जातक का स्वयं का चरित्र प्रायः सन्देहास्पद हो जाता है और राजदण्डादि का भय बना रहता है। इस योग से प्रभावित व्यक्ति को यदि सम्भव हो तो थल सेना में नहीं जाना चाहिए। समय-समय पर जातक बुरा स्वप्न भी देखता है। जिसमें सर्पादि भय होता रहता है। आर्थिक स्थिति सामान्य होती है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक अच्छी दलील देने वाला एवं वकालत तथा राजनीति के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

## विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है ।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष

सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

अष्टमभाव में सूर्य हो तो जातक धैर्यहीन, निबुद्धि, सुखी, धनी, क्रोधी, चिन्तायुक्त एवं पित्तरोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य अष्टम भाव में विद्यमान है अतः पिता का आपके प्रति स्नेह का भाव रहेगा। उनका स्वास्थ्य ठीक होगा तथापि यदा कदा शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करते रहेंगे। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी पूर्ण सहायता करते रहेंगे। पिता से आप यदा कदा विशेष धन या सम्पत्ति भी अर्जित कर सकेंगी। साथ ही व्यापार आदि कार्यों एवं यात्रा आदि में भी वे आपका सहयोग करेंगे तथा वांछित निर्देश भी देंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने तथा सेवा करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में हमेशा उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी।

### चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में

सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

### मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में मंगल हो तो जातक व्यसनी, लोभी, सट्टे से धननाशक, आचारहीन, मत्सरवृत्ति एवं बुद्धिहीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

### बुध

अष्टमभाव में बुध हो तो जातक दीर्घायु, अभिमानी, राजमान्य, कृषक, लब्धप्रतिष्ठ, मानसिक दुखी, कवि, वक्ता, न्यायाधीश, मनस्वी, धनवान् एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

### गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

## शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छा और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

## राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

## केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ढग तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूत-प्रेतों की जानकारी द्वारा ढगने वाला होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 27/03/2020 - 27/03/2038 )

राहु की महादशा 27/03/2020 को आरम्भ और 27/03/2038 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु षष्ठम भावम में स्थित है। राहु की दृष्टि बारहवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगलदशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको मामूली स्वास्थ्य-समस्या, छोटी यात्रा तथा अचानक परिवर्तन ओर छोटे भाई-बहनों से लाभ मिला होगा। राहु की इस दशा में आपको विरोधियों पर विजय, नौकरी में लाभ और स्वास्थ्य संबंधी कुछ समस्याएं होंगी।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। किन्तु किसी अन्तर्दशा में स्वास्थ्य संबंधी कुछ मामूली समस्या हो सकती है। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप वातरोग, संक्रामक रोग, चर्मरोग, रक्त की समस्या, स्नायविक दुर्बलता आदि से ग्रसित हो सकते हैं। आप जीवन में सन्तुलन अपनाकर उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द लेंगे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आपको शत्रु और विरोधियों पर विजय और उनसे लाभ मिलेगा। सट्टे में भी लाभ हो सकता है। निवेश लाभदायक सिद्ध होगा। अदालती मामले मुकदमे में फैसला आपके हक में होगा। बारहवें भाव पर राहु की दृष्टि के फलस्वरूप कुछ व्यय होगा। इसलिए उचित आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता है। जीविका और व्यवसाय के लिए विज्ञान, विमान-उड्डयन, कम्प्यूटर-प्रोग्रामिंग, दवा, यातायात, ज्योतिष, रेडियोग्राफी आदि का चयन कर सकते हैं। रसायन, इग्स, एण्टीबायोटिक्स, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को लाभ, शत्रुओं पर विजय, सम्मान तथा सहयोगियों और वरिष्ठ कर्मचारियों का सद्भाव मिलेगा। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों के लाभ में वृद्धि और व्यापार का विस्तार होगा। आपके व्यवसाय और जीवन-वृत्ति में अच्छी प्रगति होगी।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आप अपने आवास में परिवर्तन कर सकते हैं। आपको वाहन का सुख मिलेगा। आप जमीन-जायदाद की खरीद-बिक्री करेंगे। इस दशा के दौरान और खासकर मंगल की अन्तर्दशा के दौरान अक्सर छोटी यात्राएं होंगी। सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान दूर की यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। आप को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। विज्ञान, दवा, विमान इंजीनियरिंग और सभी

बौद्धिक-कार्यों में आपकी रुचि होगी। राहु शनि की राशि में स्थित है, इसलिए आप गम्भीर विषयों के अध्ययन में रुचि लेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को लाभ तथा कुछ परिवर्तन होगा। उन्हें आपकी सहायता व मार्गदर्शन की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी की अवांछित यात्रा, व्यय तथा कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको व्यवहार-कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता की छोटी यात्रा होगी, संबंधियों से सहायता तथा सुख की प्राप्ति तथा स्वास्थ्य उत्तम होगा जबकि आपके पिता का तीर्थाटन होगा और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों की जमीन-जायदाद में वृद्धि, सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा जीविका में उन्नति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों का कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ तथा अप्रत्याशित विकास होगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपकी विरोधियों पर विजय और मामूली स्वास्थ्य-समस्या होगी। गुरु की अन्तर्दशा में जमीन-जायदाद में वृद्धि, व्यापार में लाभ तथा शादी होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान उत्तम शिक्षा तथा बच्चों से सुख मिलेगा किन्तु, कुछ बाधा आ सकती है। बुध की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सफलता ओर सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, सम्पत्ति तथा समृद्धि होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में व्यय तथा दूर की यात्रा होगी। चन्द्र के फलस्वरूप हर प्रकार का लाभ मिलेगा जबकि मंगल अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या ओर परिवर्तन होगा।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि  
( 03/05/2025 - 08/03/2028 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 27/03/2020 को प्रारंभ होकर 27/03/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 03/05/2025 को प्रारंभ होकर 08/03/2028 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि को अशुभ ग्रह समझा जाता है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक विचारों के हो सकते हैं। स्वास्थ्य निर्बल हो सकता है ; वायु से संबंधित व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। उच्चाधिकारी आपसे रुष्ट हो सकते हैं, पद की हानि संभव है। प्रत्येक कदम सावधानी से रखना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

**अंतर्दशा :- राहु - बुध  
( 08/03/2028 - 26/09/2030 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/03/2020 को प्रारंभ होकर 27/03/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 08/03/2028 को प्रारंभ होकर 26/09/2030 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। अष्टम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय उत्तम होगी, विरासत में भी धन प्राप्त हो सकता है। विभिन्न विषयों के विद्वान बन सकते हैं। व्यवहार शिष्ट होगा। स्वास्थ्य दुर्बल हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु  
( 26/09/2030 - 14/10/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/03/2020 को प्रारंभ होकर 27/03/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 26/09/2030 को प्रारंभ होकर 14/10/2031 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

राहु और केतु छाया ग्रह हैं। इनकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। सामान्यतः इन्हें अशुभ समझा जाता है परंतु वास्तव में ये शुभ या अशुभ, कुंडली में अपनी स्थिति के अनुसार होते हैं।

इस अवधि में आप व्यर्थ में इधर-उधर भटक सकते हैं। निम्न वर्ग के लोगों से मित्रता हो सकती है। व्यर्थ भटकने के कारण पुरखों से मिली जायदाद की हानि हो सकती है, अतः सावधान रहना आवश्यक है। केवल अपने स्तर के लोगों से ही मित्रता रखना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें